Q. अकबर के राजपूत नीति के स्वरूप का अध्ययन करें?

Ans:→ अकबर न केवल एक बड़े साम्राज्य की स्थापना करना चाहता था वरन् एक राष्ट्र की भी। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह हिन्दू और मुसलमान तथा भारत में रहने वाले अन्य धर्म वालों को एक-दूसरे के समीप लाना चाहता था। उसने यह चेष्टा की कि हिन्दुस्तान में राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक एकता आ जाए।

इसीलिए अकबर की राजपूत-नीति के स्वरूप आज भी भारतीय इतिहास के पन्नों में मौजूद है। अकबर की राजपूत-नीति के स्वरूप को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है:→

(1) ऐसे राज्य जिन्होंने स्वतः ही अधीनता को स्वीकार कर लिया था।

(2) ऐसे राज्य जिन्होंने आरम्भ में विरोध किया परन्तु बाद में उसकी शक्ति देखकर अधीनता स्वीकार कर ली.

(3) ऐसे राज्य जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की.

II मेड़ता, रणथम्भौर, कलिंजर, गढ़ कटंगा
III चित्तौड़ (उदय सिंह)

प्रथम श्रेणी के ऐसे राज्यों में जयपुर जैसलमेर एवं बीकानेर को रखा जा सकता है इन राज्यों ने अकबर की स्वतः ही अधीनता स्वीकार की तथा अपनी पुत्रियों का विवाह उससे कर दिया. प्रतिकार के बदले अकबर ने इन राज्यों के राजाओं को अपने साम्राज्य में अनेक उच्च-अच्छे पद उनकी योग्यता के आधार पर दिये.

राजपूतों को अपनी ओर मिलाने के लिए उन्हें दरबार मुगल प्रशासन एवं सेना में महत्वपूर्ण पद प्रदान किये तथा सेना में भी बड़ी संख्या में राजपूतों को भर्ती किया गया. भारमल, भगवान दास मानसिंह, टोडरमल, बीरबल आदि को अकबर ने अपने नवरत्नों में शामिल किया

अकबर ने राजपूतों के लिए उदार नीति का अनुसरण किया उसने हिन्दुओं पर लगाये जाने वाले जजिया एवं तीर्थ यात्रा कर को हटा दिया तथा जबरदस्ती मुसलमान बनाने पर मनाही कर दी.

इन सब कार्यों के अतिरिक्त अकबर ने अनेक हिन्दू त्यौहारों - जैसे - दशहरा, होली, दीपावली आदि को दरबार में मनाना प्रारंभ कर दिया तथा स्वयं हिन्दुओं के समान तिलक लगाने लगा.

अकबर ने बाल-विवाह, सती-प्रथा आदि पर प्रतिबन्ध

लगाने के साथ-साथ पशुबलि रोकने, अन्तरजातीय विवाह को प्रोत्साहित करने तथा छुआछूत को समाप्त करने का भी प्रयास किया यद्यपि ये अकबर के सुधार, कार्य हिन्दू समाज पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ सके।

ऐसे राजपूत राज्य जिन्होंने अकबर की अधीनता सीधे स्वीकार नहीं की उनके विरुद्ध अकबर ने सैनिक कार्यवाही की तथा उनके राज्य मुगल साम्राज्य में मिला लिए गए, जैसे 1562 ई० में मेड़ता को, ठीक इसी प्रकार रणथम्भौर, कालिंजर एवं गढ़ कटंगा पर भी सैनिक अभियान किये गये।

अकबर का विरोध करने वाले राजपूत राज्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली राज्य चित्तौड़ था. यह राज्य उन सभी राज्यों से घृणा करता था, जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार की थी. अतः अकबर ने चित्तौड़ पर अपना अधिकार करने के लिए 1567 ई० में एक बड़ा अभियान कर उस पर अधिकार कर लिया लेकिन वहाँ के शासक उदयसिंह को अपने अधीन नहीं कर सका।

उदयसिंह की मृत्यु के बाद राणाप्रताप ने मुगलों से संघर्ष जारी रखा और 1576 ई० का प्रसिद्ध हल्दीघाटी

एक लड़ा जिसमें राणा के पराजित होने पर भी मृत्यु पर्यन्त मेवाड़ - मुगल संघर्ष चलता रहा. राणा प्रताप की मृत्यु के बाद भी उसके पुत्र अमरसिंह ने इस संघर्ष को जारी रखा.

इस प्रकार स्पष्ट है कि अकबर ने अपनी दूरदर्शिता का प्रयोग कर राजपूतों को अपना प्रबल समर्थक एवं मित्र बना लिया तथा अब तक उसके उत्तराधिकारियों ने उसकी नीतियों का अनुसरण किया उन्हें राजपूतों का सहयोग बराबर मिलता रहा.